पाठ 19

मैं कवि कैसे बना

(प्रस्तुत आत्मकथा में गोपालप्रसाद व्यास ने अपने बचपन में कवि बनने की लालसा का प्रस्तुतीकरण बड़े ही रोचक ढंग से किया है। बालक गोपालदास ने अपनी गलती को अपने कक्षाध्यापक के सामने स्वीकार कर उसका निराकरण पूछा। अध्यापक ने उसे तुकान्त शब्दों के माध्यम से कविता बनाने का पहला गुर सिखा दिया।)

कोई सन् 1924 के आस-पास की बात है। मैं मथुरा के अग्रवाल विद्यालय में शायद तीसरे दर्ज में पढ़ा करता था। वह भारत का जागरणकाल था। समाज-सुधारक और राष्ट्रीयता दोनों ही अपने पूर्ण यौवन पर थे। शिक्षा-संस्थाओं पर भी इनकी गहरी छाप थी। हमारे विद्यालय में भी लगभग प्रति सप्ताह कोई-न-कोई उत्सव-आयोजन होता ही रहता था। मुझे भी इन अवसरों पर उजले-उजले कपड़े पहनकर आगे बैठने में बड़ा आनन्द आता था। संगीत तो मेरे परिवार के रग-रग में था। मेरे नानाजी (नन्दन गिरवर) अपने दिनों में ब्रज की रासलीलाओं के एकछत्र स्वामी थे। मेरे पिता जी (पं0 व्रजकिशोरजी शास्त्री) को भी स्वर-ताल का अच्छा ज्ञान था। मेरी जीजी (माँ) के बिना तो हमारे गली-मुहल्ले में स्त्रियों का कोई गीत-वाद्य जमता ही न था। मैं अपने माता-पिता की अकेली संतान था, इसलिए उनकी अन्य सब चीजों के साथ संगीत भी मुझे विरासत में मिला था। इसी बपौती के कारण मैं अपने संगीत के घंटे का मॉनीटर बनता था और गणेश चतुर्थी के अवसर पर जब हमारे नगर में विद्यालय की गाती-बजाती शोभायात्रा निकलती थी तो मैं उसका बनचट्टा बनाया जाता था। लेकिन मेरा यह संगीत-ज्ञान मुझे विद्यालय के सभा-समारोहों में कोई महत्ता नहीं दिला सका। मुझे किसी समारोह में संगीत सुनाने के लिए आमंत्रित नहीं

किया गया। यह मेरे साथ सरासर अन्याय था और जहाँ तक याद पड़ता है, जान-बूझकर तो मैंने अन्याय को बचपन से ही सहन नहीं किया।

तभी मैंने देखा कि लोगों के मन में संगीत से अधिक कविता की कद्र है। मैंने पाया कि मेरे साथी लड़कों को संगीत सुनाने के लिए तो नहीं, पर कविताएँ सुनाने के लिए बड़े चाव से आमंत्रित किया जाता है, फिर यह भी देखा कि अच्छे-बुरे की, आदर-अनादर की सूचना तालियों द्वारा ही प्रकट होती है। मैं देखता कि साथी लड़कों का संगीत सुनने के बाद तालियों की तड़तड़ाहट बड़ी क्षीण होती है और उसमें भी लड़के नहीं, अध्यापक ही थोड़ा रस लेते हैं। मगर कविता के बाद जिस तरह तालियों के खाली बादल गरजते थे, उन्हें देखकर मेरे मन में भी कविताएँ सुनाने की लालसा उत्पन्न होने लगी।

मथुरा में तब ब्रजभाषा के सुप्रसिद्ध कवि श्री नवनीत चतुर्वेदी जीवित थे। उनकी वहाँ अच्छी शिष्य-मंडली थी। इन शिष्यों को ब्रजभाषा के अनेक चुटीले कवित्त-सवैये कंठस्थ होते थे। बसंतोत्सव के फूलडोलों, सावन के हिंडोलों और श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी के अवसर पर जगह-जगह इनके पढ़ंत-दंगल जुटा करते थे, जिनमें दूर-दूर के कवित्त-सवैये पढ़नेवाले मथुरा आया करते थे और हार-जीत की बाजी लगा करती थी। इनमें से एक रामलला जी हमारे पड़ोसी थे। इन्हें अकेले पावस पर ही कोई सैकड़ों छन्द याद थे। यों वह उम्र में मुझसे कोई थोड़े ही बड़े थे, लेकिन कवि होने के कारण समाज में उनकी गिनती समझदारों में हो चली थी। मंैने रामलला जी से मेल-जोल बढ़ाना प्रारम्भ किया। मैं भी अब ब्रजभाषा के पुराने कवित्त-सवैये याद करने लगा और उन्हें विद्यालय में अपना बता-बताकर सुनाने लगा।

पर शीघ्र ही मैंने देखा कि मतिराम, भूषण, पद्माकर, ग्वाल, रसखान और नवनीत के छन्दों को अधिकांश सुनने वाले पहचान जाते हैं। पहचानने के बाद उनमें सुनानेवाले के प्रति उतना आदर नहीं रह पाता जितना कि मैं चाहता था। तब मैंने अपनी राह बदली और रामललाजी से खुशामद कर-करके अपने नाम से कविताएँ बनवाने लगा और विद्यालय के उत्सवों में छाती तानकर उन्हें गर्व से सुनाने लगा। थोड़े ही दिनों में श्रोताओं पर रौब जम गया कि मैं भी अक्षर जोड़ लेता हूँ। तभी मूँड़ मुड़ाते ही ओले पड़े।

हमारे नगर में प्रति वर्ष नुमाइश लगा करती थी और उसमें हर बार एक कवि-सम्मेलन हुआ करता था। इस कवि-सम्मेलन में एक घंटा पूर्व समस्या दी जाती थी और सर्वोत्तम तीन समस्या-पूर्तियों पर कलेक्टर साहब इनाम दिया करते थे। इसके लिए शिक्षा-संस्थाएँ भी अपने यहाँ से चुने हुए छात्रकवि भेजा करती थीं। इस बार हमारे विद्यालय से मेरा नाम भी प्रतियोगिता के लिए प्रेषित कर दिया गया। मैंने सुना तो मुझे काठ मार गया। घबराया हुआ अपने क्लासटीचर के पास गया।

मेरे क्लासटीचर श्री कामेश्वरनाथजी थे। वे पक्के आर्यसमाजी थे। मेरे पिताजी के मित्र थे। मुझ पर भी बड़ा स्नेह रखते थे। मुझ जैसे शरारती को चुपचाप खिसियाया हुआ-सा देखकर वह बोले, 'भूसुरजी, क्या बात है?'

मैंै धरती की ओर देखता रहा।

उन्होंने समझा कि किसी से पिटकर या किसी को पीटकर आया है। जरा रुखाई से पूछा, "बताओ न, क्या बात है ?"

मेरे मुँह से फिर भी कोई बोल नहीं निकला। लेकिन मेरी आँखों की आर्द्रता और मँुह की बेबसी ने उनकी रुखाई को ठंडा कर दिया। उन्होंने अनुभव किया कि कोई गंभीर बात है। मेरी पीठ पर हाथ रखकर पुचकारते हुए बोले, "बोलो बेटे, क्या बात है?"

मैंने लगभग हकलाते हुए कहा, "आपने नुमाइश में मेरा नाम भिजवाया है?"

उन्हें हँसी आ गयी, कहने लगे, "हाँ तो क्या हुआ? शाम को ठीक समय पर पंडाल में पहँुच जाना। मैं भी वहीं मिलूँगा।"

शब्द आते-आते मेरे गले में अटक गये।

वह कहने लगे ‘‘झिझक तो शुरू-शुरू में होती ही है, पर नालायक, तूने झिझकना कब से सीख लिया ?’’ इस समय सोचता रहा कि कैसे कहूँ? कहूँ कि न कहूँ? अन्त में साहस करके मैंने कह ही दिया कि जी मैं जो कविताएँ सुनाया करता हूँ, वे तो सब पराई होती हैं।

कोई और अवसर होता तो मास्टरजी ने मलते-मलते मेरे कान सुर्ख कर दिये होते लेकिन भगवान की कृपा से इस बार उन्होंने वैसा कुछ नहीं किया। मुस्कराकर बोले, ‘‘धत्तेरे की ! पर अब क्या हो? हमने तो विद्यालय से अकेले तुम्हारा ही नाम भेजा है। तुम्हारे न जाने से बड़ी बदनामी होगी।’’

मैं इसका क्या जवाब देता?

वह भी कुछ देर चुप सोचते रहे, फिर एकाएक मेरा भविष्य जैसे उनकी आँखों में चमक गया हो, ऐसे उत्साह में भरकर बोले ‘‘कविता करना बहुत आसान है। तुम घबराओ नहीं। देखो, वहाँ मामूली-सी समस्याएँ दी जायेंगी, यही ‘आई है’, ‘गाई है’, ‘सुहायौ है’ आदि। तुम ऐसा करना कि जो भी समस्या तुम्हें दी जाये पहले उसकी चार तुकें जमा लेना। उदाहरण के लिए अगर ‘आई है’ समस्या दी जाय तो पहले छाई है, भाई है, एक ओर लिख लेना । समझ गये न?’’ मैंने छंद-रचना के पहले पाठ को हृदयंगम करते हुए स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया। ‘‘तो बताओ ‘सुहायौ है’ की क्या तुक बनाओगे?’’ सारी हिचक हवा हो गयी और मैंने तड़ाक से कहा ‘‘आयौ है, गायौ है, भायौ है।’

‘‘शाबाश, बस एक काम और करना।’’

वह कहने लगे-

‘‘देखो, एक कवित्त में 4 पंक्तियाँ होती हैं और हर पंक्ति में 31 अक्षर होते हैं और अन्त के अक्षरों में वही तुकें रख देना बेटे, कविता बन जायेगी।’’

यों गणित में मैं भी कभी अच्छा नहीं रहा। हमेशा तिमाही-छमाही में इसने मुझे अंडा और सालाना में बड़े प्रयत्नों के बाद प्रमोशन दिलाया है। मगर होनहार की बात कि उस दिन कविता का यह जटिल गणित मेरी समझ में तत्काल आ गया।

मुझे आज भी याद है कि उस दिन जब नुमाइश में कविता की परीक्षा देने के लिए मैं पहले-पहल पहँुचा तो मेरे मन में कोई दुविधा या संकोच नहीं था। यद्यपि आगत कविजनों में मैं सबसे छोटा था- केवल ग्यारह वर्ष का। मगर सच कहता हूँ कि मैंने उस दिन सबको अपने से छोटा अनुभव किया था, क्योंकि मैंने समझ लिया था कि कविता का जो गुर मैंने अभी आज दोपहर को प्राप्त किया है, वह इनमें से किसी के पास नहीं है।

समस्या दी गयी ''कर्ज कौ करबौ और मरबौ बराबर है।'' मैंने फौरन ''बराबर'' शब्द को पकड़ा और फुल स्केप साइज के कागज की दाहिनी तरफ एक के नीचे एक लिखना शुरू किया-'सरासर है', 'झराझर है' लेकिन जैसे बन्दूक और सन्दूक के बाद तीसरी तुक नहीं मिलती, वैसे ही मुझे बराबर की तीसरी तुक उस समय नहीं मिली पर मैं रुका नहीं, 'बराबर है' की तीसरी तुक 'ऊपर है' लिखकर फौरन समस्या-पूर्ति कर डाली।

कविता तो मुझे अब याद नहीं रही, लेकिन उसका भाव यह था कि देखो मित्र, तुम्हारे पिता ने कर्जा लिया था, उसका कैसा बुरा फल निकला। वह स्वयं तबाह हुए और तुम्हें भी बरबाद कर गये। इसीलिए किसी ने सच ही कहा है कि ''कर्ज कौ करबौ और मरबौ बराबर है।''

समस्या-पूर्ति के लिए एक घंटे का समय दिया गया था। मगर मंैने कोई बीस मिनट में ही- जैसे तेज विद्यार्थी सवाल हल करके स्लेट मास्टर साहब को पकड़ा देता है, कागज परीक्षक को थमा दिया।

उस दिन का वह दृश्य आज भी मेरी आँखों के सामने चित्र की तरह खिंचा हुआ है। कवि-सम्मेलन का पंडाल श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ था। मेरे हेडमास्टर और कविता की कुंजी बतानेवाले क्लासटीचर भी बगल की कुर्सियों पर बैठे हुए थे। भीड़ में मेरे विद्यालय के कितने ही विद्यार्थी और सहपाठी भी शामिल थे। मेरा नाम पुकारा गया। मैं उत्साह के साथ भीड़ को चीरता हुआ मंच पर आया। चारों तरफ तालियाँ बज रहीं थीं। पर मैंने उन पर कान नहीं दिया। विश्राम घाट के चैराहेवाले हनुमान जी को मैं रोज सन्ध्या को हनुमान चालीसा का पाठ सुनाया करता था। मन-ही-मन उनका स्मरण किया और हाथ हिला-हिलाकर कविता सुनाने लगा।

स्वर मेरा सधा हुआ था। शक्ल भी बचपन में बुरी नहीं लगती थी। लोगों ने जो बच्चे के मुँह से कच्ची समस्या-पूर्ति सुनी तो गद्गद हो गये। सभी लोग प्रशंसा और आश्चर्य के भाव से मुझे देख रहे थे। कविता की समाप्ति के बाद मैं तालियों के तूफान में जो खोया तो फिर सुध-बुध नहीं रही। मेरी साँस फूलने लगी। पसीना आ गया। शायद और अधिक देर होती तो मैं लड़खड़ा कर मंच पर ही बैठ जाता कि तभी हमारे विद्यालय के हेडमास्टर श्री मुकुटबिहारीलाल जी लपके हुए मंच पर आए और उन्होंने दौड़कर मुझे गोदी में उठा लिया। मुझे लगा कि मानो साक्षात देवी सरस्वती ने मुझे अंक में भर लिया है। उनकी गोद में जाते ही मेरा सम्मान कई गुना बढ़ गया। मेरे विद्यालय के लड़के जोर-जोर से तालियाँ बजा-बजाकर कूदने लगे।

मैंने गोदी से उतरकर हेडमास्टर साहब और कामेश्वरनाथ जी के चरण छुए। इस प्रकार मेरी पहली कविता ने ही धूम-धाम से मेरे कवि होने की घोषणा जनता में कर दी। घड़ीभर में मैं चोर से साहूकार हो गया।

-गोपालप्रसाद व्यास

गोपाल प्रसाद व्यास का जन्म 13 फरवरी सन् 1915 ई0 (माघ शुक्ल दशमी, संवत 1972) को मथुरा जनपद के मुहम्मदपुर (परसौली) गाँव में हुआ था। यह वही स्थान है जहाँ सूरदास ने अनेक भक्ति-पदों का निर्माण किया और वहीं पर उनका देहावसान हुआ। इनके पिताजी पं0 ब्रजकिशोर शास्त्री स्वर-ताल के अच्छे ज्ञाता थे और माता चमेली देवी गीत-वाद्य की अच्छी जानकार थीं। इनकी स्कूली शिक्षा केवल सातवीं कक्षा तक हुई। बाद

में इन्होंने विशारद, प्रभाकर और साहित्य रत्न की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। ये जाने-माने पत्रकार, लब्धप्रतिष्ठ व्यंग्यकार, शिष्ट हास्यरस के सुप्रसिद्ध कवि और लेखक हैं। 28 मई 2005 को इनका देहावसान हो गया।

शब्दार्थ

खुशामद = चापलूसी। पावस = वर्षा ऋतु। नुमाइश = प्रदर्शनी। आर्द्रता = नमी। हृदयंगम = हृदय मंे अच्छी तरह बैठा हुआ, भली प्रकार समझ में आया हुआ।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. किसी समस्या के आधार पर भी कविता लिखी जा सकती है। यहाँ कविता की एक पंक्ति दी गई है। इसे आगे बढ़ाएँ-

(क) प्लेटफार्म से गाड़ी छूटी,

.....

.....

.....।

(ख) हम सब राही एक डगर के

.....

.....

.....।

2. अपने हिन्दी के अध्यापक की सहायता से कक्षा में 'कवि दरबार' का आयोजन कीजिए, जिसमें प्राचीन कवियों की वेश-भूषा में आप उन कवियों की कविता को उचित हाव-भाव के साथ प्रस्तुत करें। कुछ छात्र, अपनी लिखी कविता भी प्रस्तुत कर सकते हैं।

3. पाठ मंे लेखक ने अपने बचपन की घटनाओं को प्रस्तुत किया है, आप भी अपने बचपन की कोई रोचक घटना लिखिए तथा कक्षा मंे प्रस्तुत कीजिए।

विचार और कल्पना

1. लेखक को अवसर मिला तो वे कवि बन गए, यदि आपको अवसर मिले तो आप क्या बनना चाहेंगे और क्यों?

2. लेखक के विद्यालय में सभा, उत्सव, समारोह आदि के अवसर पर कविताएँ प्रस्तुत की जाती थीं। आपके विद्यालय में इन अवसरों पर क्या-क्या होता है?

आत्मकथा से

1. बालक गोपालप्रसाद को संगीत के घंटे का मॉनीटर क्यों बनाया जाता था ?

2. लेखक के मन में कविताएँ सुनाने की इच्छा क्यों होने लगी ?

3. कक्षाध्यापक द्वारा नुमाइश में नाम भेजने पर बालक गोपालप्रसाद को घबराहट क्यों हुई ?

4. बालक गोपालप्रसाद द्वारा 'दूसरों की लिखी कविताओं को अपना बताकर सुनाने की चोरी' स्वीकार करने से क्या लाभ हुआ ?

5. कक्षाध्यापक ने अपने छात्र को कविता बनाने के क्या गुर सिखाए ?

6. बालक गोपालप्रसाद की 'समस्या-पूर्ति' को सुनकर श्रोताओं में क्या प्रतिक्रिया हुई ?

भाषा की बात

1. 'समाज-सुधार' शब्द 'समाज' व 'सुधार' दो शब्दों से मिलकर बना है। समाज-सुधार शब्द में सामासिक चिह्न (-) के स्थान पर कारक चिह्न 'का' छिपा हुआ है। ऐसे शब्द 'तत्पुरुष समास' कहलाते हैं। तत्पुरुष समास के ऐसे ही पाँच उदाहरण पाठ में से छाँटकर लिखिए।

2. नीचे दिये गये मुहावरों के अर्थ लिखिए और इनका प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए-

मूँड़ मुड़ाते ही ओले पड़ना, काठ मार जाना, चोर से साहूकार होना।

3. निम्नांकित पंक्तियों में पर शब्द के तीन प्रकार के प्रयोग हुए हैं-

(क) मैं मंच 'पर' कविता पढ़ने पहुँचा।

(ख) 'पर' वहाँ बहुत बड़े-बड़े कवि विद्यमान थे।

(ग) मैं कविता के 'पर' लगाकर आसमान में उड़ने लगा।

तीनों पर का प्रयोग क्रमशः 'ऊपर', 'लेकिन' तथा 'पंख' के अर्थ में हुआ है। इसी प्रकार आप भी 'पर' शब्द का प्रयोग अपने वाक्यों में करते हुए तीन वाक्य बनाइए।

इसे भी जानें

(क) बारह राशियाँ-मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन।

(ख) प्रस्तुत पाठ आत्मकथा विधा मंे लिखा गया है। आत्मकथा स्वयं के अनुभव व्यक्त करने का सबसे सरल माध्यम है। आत्मकथा के द्वारा लेखक अपने जीवन, परिवेश, महत्त्वपूर्ण घटनाओं, विचारधारा, निजी अनुभव, अपनी क्षमताओं, दुर्बलताओं के साथ-साथ अपने समय की सामाजिक व राजनैतिक स्थितियों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है।